सरदार वल्लभ भाई पटेल

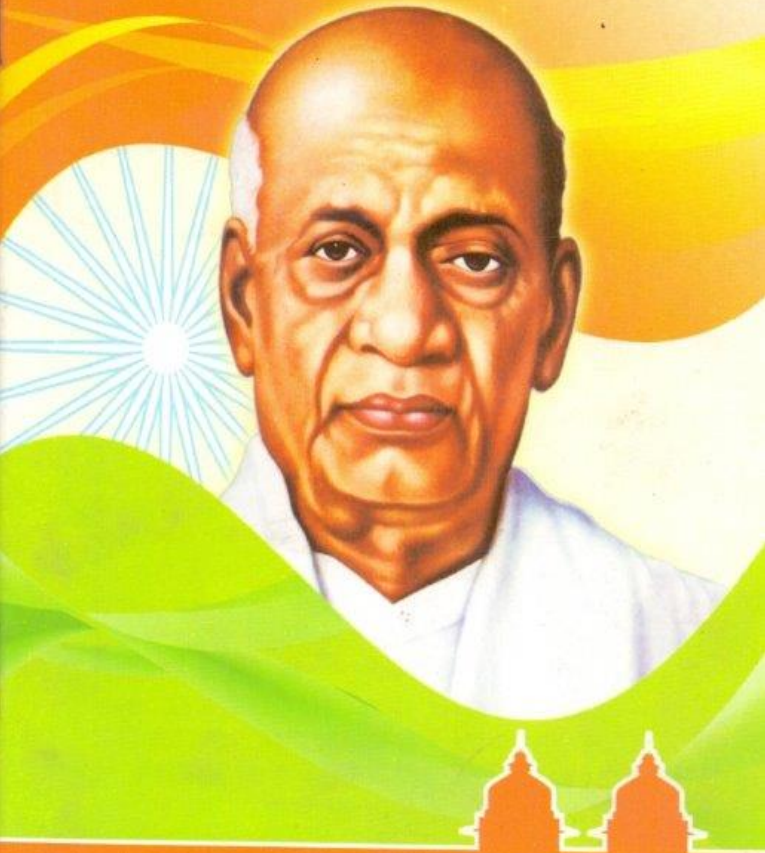

— श्रीराम शर्मा आचार्य

भारत माता के निर्भय सेनानी—सरदार पटेल

सन् १९४८ का वर्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की दृष्टि से बड़ा हलचल पूर्ण था। अगस्त १९४७ में जैसे ही देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, चारों तरफ अशांति का वातावरण दिखाई पड़ने लगा। सबसे पहले तो पचास-साठ लाख शरणार्थियों को सुरक्षापूर्वक लाने और बसाने की समस्या सामने आई। उसी के साथ-साथ अनेक स्थानों पर सांप्रदायिक उपद्रव और मारकाट को भी नियंत्रण में लाना पड़ा। एक बहुत बड़ी समस्या देशी राज्यों की भी थी, जिनको अंग्रेजी सरकार ने 'स्वतंत्र' बनाकर राष्ट्रीय सरकार के साथ इच्छानुसार व्यवहार करने की छूट दे दी थी। इस प्रकार भारत के ऊपर उस समय चारों तरफ से काली घटाएँ घिरी हुईं थीं और इन सबको संभालने का भार भारत सरकार के गृह मंत्रालय पर था, जिसके संचालक थे—सरदार पटेल।

देशी राज्यों की समस्या वास्तव में बड़ी विकट थी। अधिकांश राजागण अपने को प्राचीनकाल के बड़े-बड़े प्रसिद्ध राजा-महाराजाओं तथा 'चक्रवर्ती नरेशों' के वशंज समझकर देश का वास्तविक स्वामी स्वयं को ही मानते थे। ऐसे राजाओं का भी अभाव न था, जो मन ही मन अंग्रेजों के हट जाने पर 'तलवार के बल' से देश पर अपनी हुकूमत कायम करने का स्वप्न देखते रहते थे। भारत के देशी और विदेशी 'शत्रु' भी समझते थे कि यह समस्या भारत की आंतरिक अवस्था को इतना अधिक डाँवाडोल कर देगी कि वह सचमुच लुंज-पुंज हो जायेगा और तब हमको उस पर दाँत गड़ाने का अच्छा मौका मिलेगा। और तो क्या सामान्य लोगों की आमतौर से यह धारणा थी कि इस समय परिस्थितिवश अंग्रेज भारत को स्वराज्य देकर चले तो जा रहे हैं, पर वे जानते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि पाकिस्तान और देशी राज्यों के कारण कांग्रेसी सरकार शासन को चला सकने में समर्थ न होगी और झक मारकर अंत में उन्हीं को बुलाकर सुरक्षा करानी पड़ेगी।

पर लोगों के ये सब मंसूबे, अटकलें और भ्रम उस समय हवा में उड़ गये, जब सरदार पटेल ने चार-पाँच महीने के भीतर ही अधिकांश राजाओं को अपनी रियासतें भारतीय राष्ट्र में सम्मिलित करने को राजी कर लिया। उन्होंने शुरूआत अपने प्रांत गुजरात से ही की और वहाँ की कई-सौ छोटी-छोटी रियासतों को एक संघ में संगठित करके नवानगर के जाम साहब को उसका राज प्रमुख बना दिया। इसके पश्चात् क्रमशः मध्य भारत, पंजाब और राजस्थान की रियासतों के संघ बनाकर उनको 'भारतीय-संघ में सम्मिलित कर लिया गया। जूनागढ़, भोपाल, बड़ौदा आदि तीन-चार रियासतों के शासकों ने कुछ विरोध का भाव प्रदर्शित किया, पर सरदार ने साम-दाम-दंड-भेद की राजनीति द्वारा बिना किसी प्रकार के बल का प्रत्यक्ष प्रयोग किये, उनकी समस्या को हल कर दिया।

हैदराबाद का विजय अभियान—

पर सबसे बढ़कर कठिनाई उपस्थित हुई हैदराबाद के मामले में। वह भारत की सबसे बड़ी रियासत थी और मुसलमान उसे अपना गढ़ समझते थे। भारत विभाजन के पश्चात् वहाँ कितने ही कट्टरपंथी मुस्लिम लोग जा पहुँचे और कोशिश करने लगे कि हैदराबाद को पाकिस्तान में शामिल किया जाय। उत्तर प्रदेश के कासिम रिजवी नामक व्यक्ति ने वहाँ जाकर 'रजाकार' नाम से एक स्वयंसेवक-दल कायम कर दिया, जिसमें दो लाख हथियार बंद व्यक्ति सम्मिलित थे। हैदराबाद की ४२ हजार सरकारी सेना इसके अतिरिक्त थी। ये सब रियासत के हिंदुओं पर ही अत्याचार नहीं करने लगे, वरन् आसपास के प्रदेशों की भूमि पर आकर भी लूटमार करने लगे। एक-दो बार उन्होंने रेलगाड़ी को रोककर लूट लिया और कई आदमियों को भी मार डाला। सरदार तुरंत ही हैदराबाद के विरुद्ध कार्यवाही करने को तैयार हो गये, पर नेहरू जी तथा अन्य कई मंत्रियों के राजी न होने से रुके रहे। पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब हालत बहुत बिगड़ गई और कनाडा के राजदूत ने नेहरू जी से ईसाई स्त्रियों पर रजाकारों द्वारा आक्रमण करने की शिकायत की, तब कहीं जाकर उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने का निश्चय किया गया। सरदार ने फौज को आदेश दे दिया और मेजर जनरल जे० एन० चौधरी थोड़ी-सी सेना लेकर शोलापुर के रास्ते से आगे बढ़े।

उस अवसर पर यद्यपि कासिम रिजवी ने यहाँ तक धमकी दी थी कि अगर भारतीय सेना ने हैदराबाद में प्रवेश किया तो उसको यहाँ डेढ़ करोड़ हिंदुओं की हड्डियों के अतिरिक्त और कुछ न मिलेगा। पर सरदार ऐसी बातों की कब परवाह करते थे ? उन्होंने निजाम के प्रतिनिधि लायक अली से स्पष्ट कह दिया कि "हैदराबाद की समस्या भी उसी तरह सुलझेगी, जिस प्रकार अन्य रियासतों की सुलझी है। इसका दूसरा कोई मार्ग संभव नहीं है। हम किसी ऐसे स्थान को अपने देश में पृथक् नहीं रहने दे सकते, जो हमारे उसी संघ को नष्ट कर देगा, जिसे हमने रक्त और परिश्रम से बनाया है। हम समस्या का मित्रतापूर्ण हल ही चाहते हैं और उसके लिए प्रयत्न कर रहे हैं, किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि हैदराबाद को पूर्ण स्वतंत्र रह जाने देंगे। यदि वह स्वतंत्र रहने की अपनी माँग पर अड़ा रहा तो उसे निश्चय ही असफल होना पड़ेगा।"

यद्यपि हैदराबाद के रजाकार और अन्य धर्मांध मुसलमान बड़ा जोर-शोर दिखा रहे थे और समझते थे कि भारतीय सेना का हमला होने पर संसार के मुसलमान देश उनका साथ देंगे, पर भारतीय सेना को देखते ही वे सब बगलें झाँकने लगे। कुछ रजाकारों ने दो-तीन दिन तक जगह-जगह पर कुछ लड़ाई की, पर भारत की सुशिक्षित सेना के सामने वे भेड़-बकरियों की भीड़ से अधिक प्रभावशाली सिद्ध न हो पाये। तीन दिन के संघर्ष में लगभग एक हजार रजाकार मारे गये, जबकि भारतीय सेना की मृत्यु संख्या नाम मात्र को ही थी। १७ सितंबर १९४८ को हैदराबाद के प्रधान सेनापति एल० एदरूस ने जनरल चौधरी के सामने बाकायदा आत्म समर्पण कर दिया और १८ सितंबर को जनरल चौधरी हैदराबाद के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सैनिक गवर्नर नियुक्त कर दिये गये। फरवरी १९४९ में सरदार दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए हैदराबाद पहुँचे तो निजाम ने स्वयं हवाई अड्डे पर आकर उनका स्वागत किया और भारतीय-प्रथा के अनुसार हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया, जो उनके जीवन में एक सर्वथा नई और सर्वप्रथम घटना थी।

हैदराबाद की समस्या को इस प्रकार ३ दिन में हल करके सरदार ने भारतीय सैनिक शक्ति और राजनीति की धाक समस्त देश में जमा दी। इससे वे सब 'तत्त्व' ठंडे पड़ गये, जो शासन बदलने के कारण जगह-जगह सर उठा रहे थे और समझते थे कि हम इन अनुभवहीन शासकों को दबा-धमकाकर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे। हैदराबाद की इस शानदार विजय से भारतीय जनता में उत्साह की लहर दौड़ गई और शेष बची रियासतें बहुत शीघ्र भारतीय संघ के अंतर्गत आने को तैयार हो गईं।

छह-सात सौ रियासतों का भारतीय संघ में पूर्णतः विलय होकर एक अखंड राष्ट्र का निर्माण कुछ समय पहले तक एक असंभव कार्य समझा जाता था। पर सरदार पटेल ने उसे ऐसी खूबी से पूरा करके दिखा दिया कि देश-विदेशों के समस्त राजनीतिज्ञ चकित रह गये। यह कहने में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं कि जो कार्य जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क ने कर दिखाया और जापान को एक सुदृढ़ राष्ट्र बनाने में मिकाडो ने जो महान् सफलता प्राप्त की, सरदार पटेल के कर्तृत्व का महत्त्व भी उससे कम नहीं है। जर्मनी और जापान तो उस समय चार-पाँच करोड़ की जनसंख्या के छोटे देश ही थे, पर सरदार ने तो उस भारत को एक कर दिखाया, जिसको विविधता और विस्तार की दृष्टि से अनेक लोग एक 'महाद्वीप' की संज्ञा देते हैं।

देशभक्तों का परिवार—

सरदार वल्लभ भाई पटेल (सन् १८७५ से १९५०) यद्यपि गुजरात के एक साधारण किसान परिवार में उत्पन्न हुए थे, पर उनका घराना देशभक्ति की दृष्टि से अग्रगामी कहा जा सकता है। उनके पिता झवेर भाई जब बीस वर्ष के तरुण ही थे तो भारत में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए 'संत्तावनी गदर' फूट पड़ा। यद्यपि उसका प्रभाव गुजरात तक नहीं पहुँचा, तो भी झवेर भाई के दिल में देशोद्धार के अभियान में भाग लेने की उमंग उठने लगी और वह बिना किसी से कहे घर से भाग निकले। उन्होंने उत्तर प्रदेश में आकर नाना साहब और अंग्रेजों का तुमुल संघर्ष देखा और फिर स्वयं भी झाँसी की वीर रानी लक्ष्मीबाई की सेना में भर्ती होकर गोरों से खूब लड़े। गदर के ठंडा हो जाने पर भी वे तात्या टोपे आदि विद्रोही नेताओं के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम की ज्योति को जगाते रहे और अंत में अपने ही देशवासी इंदौर नरेश के द्वारा पकड़े गये। वहाँ से छुटकारा पाकर ३ साल बाद वे घर लौटे और जीवन-निर्वाह के लिए पुनः अपने गृह-व्यवसाय—कृषि-कार्य में संलग्न हुए। उनका चरित्र हमको इटली के उन प्रसिद्ध देशभक्तों के तुल्य ही दिखाई पड़ता है, जो साधारण समय में खेती-बारी करते रहते थे, पर देशरक्षा की पुकार सुनते ही सब कुछ छोड़कर रण-भूमि में पहुँच जाते थे।

वल्लभ भाई भी छोटी आयु से काफी निडर और सहिष्णु थे। एक बार उनके बड़ा-सा फोड़ा हो गया। उस समय गाँवों के आसपास आपरेशन कर सकने वाले अस्पताल या डॉक्टर तो थे नहीं, इसलिए उसे फोड़ने के लिए देशी तरीके के अनुसार लोहे की शलाका गर्म की गई। पर फोड़े का इलाज करने वाला इतने छोटे बालक पर उसका प्रयोग करने में हिचकिचाने लगा। यह देखकर वल्लभ भाई ने कहा—"वाह, तुम तो फोड़े को फोड़ने में भी डरते हो।" यह कहकर उन्होंने उस खूब गर्म सलाख को उठाकर स्वयं ही फोड़े में घुसा दिया। दर्शकगण छोटे बालक के साहस को देखकर आश्चर्य करने लगे।

जिस समय वे स्कूल की छोटी कक्षा में पढ़ते थे तो उन्होंने एक लालची मास्टर के विरुद्ध आंदोलन खड़ा किया। बात यह थी कि मास्टर साहब ने स्कूल की नौकरी के साथ ही गाँव में पुस्तकों की दुकान भी खोल रखी थी और सबको इस बात के लिए विवश करते थे कि पढ़ाई की पुस्तकें अन्यत्र से न लेकर उन्हीं की दुकान से ली जायें। यह बात लड़कों को बुरी लगती थी, पर मास्टर के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भय से वे कुछ बोल नहीं पाते थे। पर जब यह बात वल्लभ भाई के सामने आई तो उन्होंने इसे अनुचित समझकर स्वीकार नहीं किया और सब लड़कों को उत्साहित करके स्कूल में हड़ताल करा दी। जब लड़के पाँच-छह दिन तक स्कूल नहीं गये तो मास्टर को अपना दुराग्रह त्यागना पड़ा। इस पर वल्लभ भाई ने भी हड़ताल समाप्त करा दी।

इस प्रकार सरदार पटेल आरंभ से ही अन्याय के विरोधी रहे और साहस के साथ उसका मुकाबला भी करते रहे। उनका यह गुण जीवन के अंत तक कायम रहा और इसी के बल से वे शक्तिशाली अंग्रेज शासकों से भी डटकर लोहा ले सके। उनकी बातचीत ही प्रायः इतनी स्पष्ट और निर्भीक होती थी कि अधिकांश मामलों में उनके विरोधी उनके सामने झुककर अन्याय से हट जाते थे।

भाई के लिए त्याग—

घर की आर्थिक अवस्था को देखकर वल्लभ भाई ने कॉलेज की पढ़ाई का विचार स्थगित कर दिया और मुख्त्यारी की परीक्षा देकर अदालत में मुकदमों की पैरवी करने लगे। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और परिश्रम के फलस्वरूप उनका काम शीघ्र ही जम गया और अपने कस्बे के नामी मुख्त्यार माने जाने लगे। कुछ समय बाद जब काम लायक रुपया इकट्ठा हो गया तो उन्होंने बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने का विचार किया और इसके लिए 'पासपोर्ट' माँगा। उनकी अर्जी का जो उत्तर आया, वह उनके बड़े भाई विट्ठल भाई के हाथ पड़ गया, क्योंकि दोनों ही मुख्त्यारी करते थे। पासपोर्ट के पत्र को पढ़कर विट्ठल भाई ने कहा कि—"मैं तुमसे बड़ा हूँ, इसलिए पहले मुझे बैरिस्टरी कर आने दो, तुम बाद में जाना।" वल्लभ भाई को अपने बड़े भाई की बात युक्तियुक्त जान पड़ी और उनके खर्च का भी भार स्वयं अपने ऊपर लिया। जब सन् १९०८ में वे वापस आ गये तब सन् १९१० में वे स्वयं विलायत गये। वहाँ उन्होंने सब प्रकार शौक और व्यसनों से दूर रहकर इतने परिश्रम से पढ़ाई की जिससे आरंभिक परीक्षा में ही सर्वप्रथम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तीर्ण हुए। इस पर ५० पौंड (तीन हजार रुपया) का पुरस्कार मिला और पढ़ाई की फीस माफ हो गई। आपने बैरिस्टरी की परीक्षा बड़ी सफलता के साथ उत्तीर्ण की। आपके उत्तरों को पढ़कर एक परीक्षक इतना प्रभावित हुआ कि उसने इन्हें ऊँची से ऊँची सरकारी नौकरी देने की सिफारिश की, पर इनको अपने देश की लगन लगी थी। इसलिए परीक्षोत्तीर्ण होने के दूसरे ही दिन इंगलैंड से रवाना होकर अपने घर आकर बैरिस्टरी करने लगे।

वर्तमान समय में अनेक परिवारों में भाइयों के बीच जैसा वैमनस्य देखने में आता है, और संपन्न परिवारों में तो प्रायः धन-संपत्ति के बँटवारे के लिए मुकदमेबाजी होती रहती है, उसे देखते हुए सरदार पटेल का भ्रातृ-प्रेम और स्वार्थ-त्याग उच्चकोटि का ही माना जायेगा। जिन लोगों में इस प्रकार की मनोवृत्ति का अभाव होता है, वे संसार में कभी कोई परमार्थ का बड़ा कार्य नहीं कर सकते। आगे चलकर भी सरदार पटेल बैरिस्टरी का ऐश्वर्यशाली जीवन त्यागकर गांधीजी के अनुयायी बने और असहयोग आंदोलन में काम करते हुए उन्होंने हर तरह के संकट और कष्ट सहन किए। इन सबमें उनकी यही परोपकार वृत्ति काम कर रही थी। इसमें संदेह नहीं कि यही मानव-जीवन को सार्थक करने का मार्ग है। अन्यथा जो व्यक्ति संसार में आकर अपनी तमाम शक्ति और समय केवल अपना तथा अपने परिवार के दो-चार व्यक्तियों का पेट भरने में ही लगा देते हैं, उनका जन्म लेना या न लेना बराबर ही है।

सत्याग्रह आंदोलन में—

सरदार गांधीजी के अनुयायी सन् १९१७ में ही बन चुके थे और जलियाँवाला बाग हत्याकांड के अवसर पर उन्होंने अहमदाबाद की हड़ताल और जुलूस का नेतृत्व करके राजनीतिक आंदोलन में भाग लेना भी आरंभ कर दिया था। इसलिए सन् १९२० में जब कांग्रेस ने कलकत्ता और नागपुर के अधिवेशनों में 'असहयोग' की घोषणा की तो सरदार ने तुरंत बैरिस्टरी को त्याग दिया। अपने पुत्र-पुत्रियों का सरकारी शिक्षा-संस्थाओं में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पढ़ाना बंद कर दिया। उसी समय उन्होंने असहयोग करने वाले बहुसंख्यक विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा प्रदान करने के लिए "गुजरात विद्यापीठ" की स्थापना की और इसके लिए बर्मा तक का दौरा करके दस लाख रुपया इकट्ठा कर लाये।

इसके कुछ ही समय बाद नागपुर झंडा सत्याग्रह का अवसर आया। मध्यप्रदेश की सरकार ने नागपुर की सिविल लाइन्स में राष्ट्रीय झंडे का जुलूस निकालने पर प्रतिबंध लगा दिया। इस पर वहाँ के कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह आरंभ कर दिया और प्रतिदिन सत्याग्रही स्वयंसेवकों के जत्थे 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' गाते हुए पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये जाने लगे। नागपुर के कार्यकर्ताओं ने उसके लिए समस्त देश से सहायता की अपील की। इस संबंध में सरदार पटेल के प्रभाव से गुजरात ने बहुत कार्य किया और वे लगातार स्वयंसेवकों के जत्थे और रुपया भेजते रहे। फिर जब सरकार ने आंदोलन के सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को एक साथ पकड़ लिया तब सरदार स्वयं नागपुर पहुँचकर आंदोलन का संचालन करने लगे। उन्होंने उसका इतना जोरदार संगठन किया कि सरकार घबरा उठी और गवर्नर ने सरदार को बुलाकर स्वयं समझौते की बातें की और बिना किसी शर्त के कैदियों को छोड़ कर सर्वत्र झंडा निकाल सकने की माँग को स्वीकार कर लिया।

यह झंडा-सत्याग्रह ऐसे अवसर पर आरंभ किया गया था, जब गाँधी जी ने चौरीचौरा हत्याकांड हो जाने के बाद, प्रायश्चित्त स्वरूप समस्त असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया था और इस कारण देश में एक अवसाद की-सी स्थिति पैदा हो गई थी। इसलिए क्रियाशील नेता, जिनमें सरदार पटेल अग्रगण्य थे, चाहते थे कि अगर सार्वदेशिक आंदोलन संभव न हो तो कोई स्थानीय आंदोलन ही ऐसा चलाया जाय, जिससे देश में जाग्रति बनी रहे, इसलिए यद्यपि नेहरू जी तथा श्री चित्तरंजन दास जैसे नेता 'झंडा सत्याग्रह' के पक्ष में न थे, फिर भी श्री पटेल ने आरंभ से ही उसका समर्थन किया और बाद में स्वयं उसका संचालन करके उसे सफल बनाया। इससे वास्तव में समस्त देश में जोश की एक लहर फैल गई और अनुत्साह की भावना कुछ अंशों में दूर हो गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोरसद का सत्याग्रह—

बोरसद का सत्याग्रह अपने ढंग का अनोखा था। वहाँ पर देवर बाबा नाम का एक जबर्दस्त डाकू बहुत लूटमार करता रहता था, पर पुलिस सब कुछ प्रयत्न करके भी उसे न पकड़ सकी। कुछ दिन बाद दूसरा डाकू, जो मुसलमान था, उसी इलाके में आ गया। अब जनता की परेशानी और भी बढ़ गई और संध्या होते ही लोग घरों के भीतर ही रहने लगे। तब सरकार ने जनता पर ही इल्जाम लगाया कि गाँवों के लोग ही डाकुओं से मिलकर लूटमार कराते हैं। बोरसद निवासियों पर २ लाख ४० हजार रु० टैक्स लगा दिया, जिससे वहाँ पर तैनात पुलिस का खर्च निकल सके। सरकार की इस धींगाधींगी की शिकायत कुछ लोगों ने श्री पटेल के पास जाकर की। वे बोरसद पहुँचे और वहाँ की परिस्थिति का निरीक्षण करके, लोगों को सलाह दी कि वे सरकार को एक पैसा भी टैक्स का न दें और दो सौ स्वयं सेवक भर्ती करके स्वयं अपने गाँवों में चौकी-पहरा का इंतजाम करें। आपने लोगों में इस बात का साहस भरा कि जब डाकू आवें तो भयभीत होकर भागने की अपेक्षा डटकर उनका मुकाबला किया जाय। दूसरी बात आपने यह की कि गाँव में रक्षा के लिए तैनात पुलिस वालों की कारगुजारी के फोटो खिंचवाये। उनसे मालूम हुआ कि जब कोई डाकू दल गाँव में आता है तो पुलिस वाले उनका मुकाबला करने के बजाय या तो छिप जाते हैं या ताला लगाकर भीतर बैठे रहते हैं। इन फोटो के द्वारा उन्होंने पुलिस की कायरता का भंडाफोड़ करके सरकार से कहा कि ऐसी हालत में उसको जनता से जुर्माना वसूल करने का क्या अधिकार है ? अंत में सरकार को सच्चाई के सामने झुकना ही पड़ा और गाँव से पुलिस हटा ली गई। उसके बाद देवर बाबा का भी पता नहीं लगा कि कहाँ चला गया ?

भारत की थर्मापौली बारदौली—

पर जिस महान् कार्य के फलस्वरूप श्री पटेल को सरदार की उपाधि दी गई और जिसने भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास में अपने अमिट पदचिह्न छोड़ने का गौरव प्राप्त किया, वह था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बारदौली का अहिंसक संग्राम। यूनान देश के इतिहास में 'थर्मापौली' के युद्ध की एक घटना तीन हजार वर्ष बीत जाने पर भी आज तक अविस्मरणीय मानी जाती है। उसमें दो-तीन सौ देश-भक्तों की टोली ने एक तंग पहाड़ी मार्ग पर मोर्चा लगाकर आक्रमणकारी विशाल सेना का मुकाबला किया था और अपनी वीरता तथा आत्म-त्याग से उसे नाकों चने चबवा दिये थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उस महान् पर्व में गुजरात के छोटे-से बारदौली तालुका ने भी संसार में सबसे बड़े साम्राज्य की स्वामिनी कहलाने वाली ब्रिटिश सरकार को ऐसी करारी हार दी कि सब कोई 'वाह-वाह' कहने लगे और तभी भारत के राष्ट्रकवि ने गाया—"धन्य बारदौली, तू भारत की थर्मापौली।"

बारदौली सूरत जिले का एक छोटा भू-भाग है, जो जलवायु की निगाह से बहुत उपजाऊ माना जाता है। वहाँ के निवासी मुख्य रूप से 'कणवी' या 'कुनवी' नामक जाति के किसान हैं। वे स्वभाव से ही परिश्रमी होते हैं और अपना पसीना बहाकर उन्होंने अपने खेतों को खूब हरा-भरा और उपजाऊ बना रखा था। यह देख सरकारी अधिकारियों को लालच लगता था और वे भूमि का लगान क्रमशः बढ़ाते जाते थे। भारतीय किसान अशिक्षित और मूक होते ही हैं, इसलिए डरकर सरकारी हुक्म को बराबर मानते चले आते थे। पर जब सन् १९२० में महात्मा गांधी ने सत्याग्रह और असहयोग का शंखनाद किया, तो देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाग्रति और उत्साह की एक लहर व्याप्त हो गई। गुजरात को उसने सबसे अधिक प्रभावित किया, क्योंकि गांधीजी और उनके प्रमुख सहयोगी वहीं रहते थे। इसलिए बारदौली के निवासियों पर उनका प्रभाव अधिक पड़ने लगा और आरंभ से ही वे चर्खा चलाना, खादी का उपयोग, शराबबंदी आदि कार्यक्रमों में आगे बढ़कर भाग लेने लगे।

जब सन् १९२७ में सरकार ने बारदौली तालुका पर पुनः लगान बढ़ाने की घोषणा की, तो उनमें असंतोष की भावना उत्पन्न हो गई और उन्होंने अपने चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा बंबई की विधान सभा में इसका विरोध किया। जब सरकार ने इस पर कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्यान नहीं दिया तो वे सरदार पटेल के पास पहुँचे और अपनी विपत्ति की कथा कह सुनाई। कांग्रेस के नेता पहले से ही "करबंदी सत्याग्रह" आरंभ करने की योजना बना रहे थे। बारदौली उनको इस प्रयोग के लिए सबसे उपयुक्त क्षेत्र जान पड़ा, इसलिए श्री पटेल शीघ्र ही वहाँ पहुँच गए। उन्होंने देखा कि बारदौली की जमीन उत्तम है और वहाँ के नर-नारी भी काफी परिश्रम करने वाले हैं, फिर भी उनकी आर्थिक अवस्था और रहन-सहन बहुत सामान्य दर्जे का है। कारण यही है कि वे अशिक्षित और असंगठित होने के कारण सरकारी नौकरों, शराब का व्यापार करने वाले पारसियों और कर्ज देने वाले साहूकारों द्वारा तरह-तरह से लूटे जाते हैं। वल्लभ भाई ने इस अवसर को उनके जागरण और संगठन के लिए सर्वोत्तम समझा। पर वे बड़े स्पष्टवक्ता और अनुशासनप्रिय थे। उन्होंने आरंभ में ही बारदौली की जनता से साफ-साफ कह दिया कि—"अगर तुमको बढ़ा हुआ लगान रद्द कराना है तो उसके लिए जोरदार आंदोलन करना और उसमें सब तरह के कष्टों और हानि को सहने करने के लिए तैयार होना पड़ेगा। मैं राजनीति का खेल नहीं करता और न किसी ऐसे साधारण कार्य में हाथ डालता हूँ, जिसमें जोखिम-खतरा न हो। जो लोग जोखिम और कष्ट उठाने के लिए तैयार हों, मैं उन्हीं का साथ दे सकता हूँ।"

वल्लभ भाई का जन्म किसान के घर में हुआ था और छोटी आयु में उन्होंने अपने पिता के साथ कुछ खेती का कार्य किया भी था, इससे वे कृषक जीवन की सब कठिनाइयों और असुविधाओं को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने किसानों को सरकार से संघर्ष करने के लिए उत्साहित करते हुए कहा—"किसान क्यों डरें ? वह भूमि को जोतकर धन कमाता है, वह अन्नदाता है, वह दूसरों की लात क्यों खावे ? मेरा यह संकल्प है कि मैं दीन तथा निर्धनों को उठाकर उनके पैरों पर खड़ा कर दूँ, जिससे वह ऊँचा माथा करके चलने लगे। यदि मैं इतना कार्य करके मरा तो मैं अपने जीवन को सफल मानूँगा। जो किसान वर्षा में भीगकर कीचड़ में सनकर, शीत-घाम को सहन करते हुए मरखने बैल तक से काम लेता है, उसे डर किसका ? सरकार भले ही बड़ी साहूकार हो, पर किसान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका किरायेदार कब से हुआ ? क्या सरकार इस जमीन को विलायत से लाई है ?"

श्री पटेल के जोशीले भाषणों और उनकी अदम्य, निर्भीक वाणी को सुनकर बारदौली के किसान सोते से जाग पड़े। उन्होंने अंत तक संघर्ष करने और उसके मध्य जितनी भी आपत्तियाँ आवें, उन सबको दृढ़तापूर्वक सहने की प्रतिज्ञा की। यह देखकर पहले तो श्री पटेल ने बंबई के गवर्नर को लगान बढ़ाने का हुक्म रद्द करने के लिए एक तर्कयुक्त और विनम्र पत्र लिखा और जब उसे अस्वीकार कर दिया गया तो उन्होंने सरकार के विरुद्ध करबंदी आंदोलन की घोषणा कर दी। उन्होंने किसानों का जैसा सुदृढ़ संगठन किया, उसे देखकर बंबई की एक सार्वजनिक सभा में किसी भाषणकर्ता ने उनको 'सरदार' के नाम से पुकारा। गांधीजी को यह नाम पसंद आ गया और तब से पटेल जनता के सच्चे 'सरदार' ही बन गए।

अब सरदार सरकार के साथ लड़ने के लिए पूरी तैयारी करने लगे। पर वे तो महात्मा गांधी के 'अहिंसाव्रतधारी' सैनिक थे। इसलिए उन्होंने किसानों को समझाया—"देखो भाई ! सरकार के पास निर्दयी आदमी हैं। उनके पास भाले, बंदूकें, तोपें सभी कुछ हैं। वह संसार की एक बड़ी हथियारबंद शक्ति है। तुम्हारे पास केवल तुम्हारा हृदय है। अपनी छाती पर इन प्रहारों को सहने का साहस, तुममें हो तो आगे बढ़ने की बात सोचो। इस समय सबसे बड़ा प्रश्न स्वाभिमान का है। सरकार निर्दयता के साथ हम पर अत्याचार करना चाहती है और साथ ही अपमानित भी। देखो भाई ! अपमानित होकर जीने की अपेक्षा सम्मान के साथ मर जाने में अधिक शोभा है।"

जब किसान उनके कार्यक्रम से पूर्ण सहमत हो गये और उन्होंने सब तरह का बलिदान करने की प्रतिज्ञा कर ली तो वे गाँव-गाँव में फिरकर लोगों को कर्तव्यपालन के लिए तैयार करने लगे। वे पुरुषों के साथ स्त्रियों को भी सत्याग्रह संग्राम में सम्मिलित करना आवश्यक समझते थे। इसलिए उन्होंने एक विशाल सभा में कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"भाइयों ! बारदौली में आज मैं एक नवीन चमत्कार देख रहा हूँ। पिछले दिन मुझे स्मरण है। उन दिनों सभाओं में पुरुषों के साथ बहिनें भी होती थीं। पर अब तो पुरुष ही पुरुष गाड़ियाँ जोतकर सभाओं में आ जाते हैं। जान पड़ता है, बड़े-बूढ़ों के लिए आप ऐसा करते हैं। पर मैं कहता हूँ कि हमारी बहिनें, माताएँ और स्त्रियाँ हमारे साथ न होंगी तो हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे। कल से ही हमारी वस्तुएँ हमसे छीनी जाने लगेंगी। सरकारी कर्मचारी हमारी गाय, भैंस, बर्तन आदि लेने आयेंगे। यदि हमारी बहिनें इस युद्ध से परिचित न होंगी, हम अपने साथ-साथ उन्हें भी चेतावनी नहीं देंगे तो वे उस समय क्या करेंगी ? आप स्वयं सोचें कि जब जब्ती वाले आपके बैल खोलकर चलेंगे, तो आपकी स्त्रियों के मन पर क्या बीतेगी ?"

जो लोग आजकल के अनुचित तरीकों से धन-संग्रह करने वाले और मोटर तथा बंगलों के बिना निर्वाह न कर सकने वाले 'नेताओं' को देख रहे हैं, वे सहज में इस बात का अनुमान नहीं कर सकते कि सरदार पटेल किस प्रकार के नेता थे ? वे नाम के ही 'सरदार' न थे, पर उन्होंने वास्तव में बारदौली के किसानों का संगठन सैनिक ढंग पर किया था और उनमें मर मिटने की भावना फूँक दी थी। वे स्वयं दिन-रात चारों तरफ दौरा करके, किसानों की सभायें करके उनके उत्साह को बढ़ाते रहते थे और अपना उदाहरण दिखाकर उनको प्रत्येक परिस्थिति में निर्भय रहने का उपदेश देते थे। वे कहते थे—

"चाहे कितनी ही आपत्तियाँ आयें, कितने ही कष्ट झेलने पड़ें, अब तो ऐसी लड़ाई लड़नी चाहिए, जिसमें सम्मान की रक्षा हो। सरकार चाहे जो करे, हम स्वयं उसको एक पैसा भी अपने हाथ से उठाकर नहीं देंगे। बस यही निश्चय कर लीजिए। अपने भीतर लड़ने का साहस बढ़ाइये और एकता को दृढ़ कीजिए। केवल बाहरी कोलाहल से कुछ न होगा। सरकार आपकी कड़ी से कड़ी परीक्षा लेगी। यदि उससे लड़ना हो, तो गाँवों को जगाना होगा, सारे वातावरण को बदल देना होगा। अब उत्सव-मंगल की वेला भी नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। अब तो युद्ध का मौका है। भला कहीं युद्ध में विवाह-मंगल का समय होता है ?

"अब तो हमें लड़ाई में लड़ने वाले सिपाहियों जैसा जीवन बिताना होगा। कल से ही आप अपने घरों में ताले लगाकर दिन भर खेतों में घूमते रहें। बालक, बूढ़े, स्त्री सभी अपना काम समझ लें। धनी-दीन सब एक हो जायें और इस तरह काम करें जैसे एक ही शरीर हों। आप ऐसा काम कर दिखायें कि जब्तियाँ कराने को सरकार को एक भी आदमी न मिले। कोई सरकारी अधिकारी अपने सिर पर आपके बर्तन उठाकर ले जाए तो भले ही ले जाए ! अधिकारी तो लँगड़े होते हैं। उनका काम गाँव में पटेल, मुखिया, बहीवटदार, तलाटी आदि की सहायता से ही चलता है। पर अब ये कोई भी उनकी सहायता न करें। आप इन सबको बता दें कि हमारे गाँव और प्रांत की प्रतिष्ठा के साथ ही हमारी प्रतिष्ठा है, जिसके कारण गाँव की प्रतिष्ठा नष्ट हो वह मुखिया कैसा ? आइये, हम ऐसी वायु बहा दें, जिससे चारों ओर स्वराज्य की सुगंध छूट रही हो। प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर सरकार के साथ लड़ने का दृढ़ निश्चय हो।"

"मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि अब एक क्षण भी आमोद-प्रमोद में बैठने का समय नहीं है। बारदौली की कीर्ति समस्त भूमंडल में फैल रही है। अब तो हमें मर-मिटना है या पूर्ण सुखी होना है। अब तो रामबाण छूट ही गया है। हमारे गिर जाने में सारे देश की हानि है, हमारे डटे रहने में ही बेड़ा पार है। इसलिए आप पूर्ण सावधान रहें, कोई भूल न कर बैठें। सरकार आपको गिराने में कोई बात उठा न रखेगी। वह आप में फूट डालने की चेष्टा करेगी, आपसी झगड़े भी पैदा करना चाहेगी। और भी कई ढंग के जंजाल खड़ा करने की कोशिश करेगी, इसलिए आप अपने आपसी झगड़ों को भी इस समय भूल जाइये। बाप-दादों के समय की शत्रुता को त्याग दीजिए। जीवन भर जिससे कभी न बोले हों, उससे बोलना आरंभ कर दीजिये। आज गुजरात की महिमा आपके ही हाथों में है। यदि आप में एका होगा तो कोई दूसरा मनुष्य आपके खेतों में हल नहीं चला सकता। जिस दिन ऐसा हुआ भी तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सारा गुजरात आपकी सहायता को दौड़ पड़ेगा और तमाम भारत आपका साथ देगा। आपस में कभी ईर्ष्या मत कीजिए। जहाँ एक को बिगड़ते हुए देखकर दूसरा हँसता है तो ऐसे देश का कभी भला नहीं हो सकता। अस्तु, युद्ध की घोषणा हो चुकी है। अब प्रत्येक गाँव को सेना की छावनी समझिए। प्रत्येक गाँव के समाचार निरंतर केंद्र में आने चाहिए।"

वास्तव में सरदार पटेल ने बारदौली के किसान-सत्याग्रह का संचालन ऐसी योग्यता और मुस्तैदी से किया कि सरकार की समस्त चालें और अनेक प्रकार का दमन प्रभावहीन हो गया। वहाँ जब किसी इक्का-दुक्का किसान को लगान देने के लिए दबाया जाता तो वह यही जबाव देता कि बिना पंचायत की आज्ञा के हम कुछ नहीं दे सकते। जब उनके गाय, बैलों, गृहस्थी के सामान के कुर्क करने की धमकी दी जाती तो भी वह जरा भी न घबराता, न भयभीत होता। अनेक किसानों का सामान सरकारी कर्मचारी उठा ले गये, पर उसको खरीदने वाला कोई न मिला। वह सरकारी दफ्तरों में ज्यों का त्यों पड़ा रहा। एक पटवारी ने एक गरीब किसान से कहा—

"अरे भले आदमी ! जब सारे गाँव में फूट पड़ जायेगी तब तू भी झख मारकर लगान देगा तो अभी क्यों नहीं दे देता ?"

"ऐसी बात मुँह से न निकालिए साहब ! सारे जिले के लोग भले ही लगान दे दें, पर हम तो थूककर नहीं चाटते।"

पटवारी—"अरे भाई, हमारी बात चाहे मत रख। जब बड़े अधिकारी आयेंगे तब उनकी बात तो मानेगा।"

किसान—"उनका बड़प्पन हमारे किस काम का ? अब तो वल्लभ भाई हमारे सरदार हैं, उनकी जैसी आज्ञा होगी वही मैं करूँगा।"

एक तहसीलदार ने किसी किसान से लगान देने को कहा तो उसने उत्तर दिया—"पुराने हिसाब से लगान लेकर आप तमाम पुराने-नये लगान की रसीद दें दें और साथ ही यह भी लिख दें कि तीस वर्षों तक लगान नहीं बढ़ाया जायेगा तो अभी लगान चुका दिया जायेगा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तहसीलदार ने इतना ही कहा—"भाई ! यह तो मेरे अधिकार की बात नहीं है।" यह कहकर वे चले गए।

बारदौली में नई दुनिया की रचना—

उस समय बारदौली की स्थिति कहाँ तक गंभीर हो गई थी, इसका कुछ अनुमान बंबई के अंग्रेजों के मुख्य पत्र 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के निम्न लेखांश से हो सकता है—

"आर्य देश के बंबई प्रांत में बारदौली नाम का एक मंडल है। वहाँ महात्मा गांधी ने बोल्शेविज्म का प्रयोग करना आरंभ कर दिया है। प्रयोग सफल भी होता जा रहा है। वहाँ सरकार के सारे कल-पुर्जे मंद पड़ गये हैं। गांधीजी के शिष्य पटेल का बोलबाला है। वही वहाँ का 'लेनिन' है। स्त्रियों, बालकों और पुरुषों में एक नई ज्वाला धधक रही है। इस ज्वाला में राजभक्ति की अंत्येष्टि क्रिया हो रही है। स्त्रियों में नवीन चेतनता भर गई है। वल्लभ भाई में वे असीम भक्ति रखती हैं। उनके गीतों में राज-विद्रोह की भयंकर आग सुलग रही है। उनको सुनते ही कान जलने लग जाते हैं या ऐसा ही रहा तो वहाँ रक्त की नदियाँ बहने लगेंगी।"

एक तरफ अंग्रेजों के पत्र इस प्रकार किसान आंदोलन के विरुद्ध विष वमन कर रहे थे और अपनी समझ से बारदौली के किसानों को संसार की दृष्टि में विद्रोही और बागी सिद्ध करके वहाँ खून-खराबा होने का भय दिखला रहे थे और दूसरी ओर बंबई के पारसी नेता श्री नरीमैन भड़ोंच जिला परिषद् के अधिवेशन में अपने भाषण में कह रहे थे—

"आज से दस-बीस वर्ष पहले जो किसान था, वह किसान अब नहीं रहा। बारदौली में आज अंग्रेजों को पूछता कौन है ? आज मारपीट कर जबर्दस्ती ही किसान को वे कहीं ले जा सकते हैं। नहीं, तो, वहाँ अब कौए उड़ते हैं। लोगों की सच्ची कचहरी तो 'स्वराज्य-आश्रम' है और उनकी सरकार है—सरदार वल्लभ भाई। पर वल्लभ भाई के पास न तो तोप है, न भाले और न बंदूक। वह तो केवल प्रेम और सत्य के सहारे बारदौली में राज कर रहे हैं। अब तो सारे गुजरात को ही बारदौली बन जाना चाहिए। सारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारत में यह भावना फैल जायेगी, तब स्वराज्य अपने आप हो जायेगा।

इस प्रकार सरदार पटेल ने बारदौली में एक नई दुनिया की रचना करके दिखा दी। अंग्रेजों का राज और उनकी पुलिस, फौज सब कुछ होने पर भी वहाँ उनकी शक्ति बिल्कुल समाप्त हो गई थी। सरदार पटेल ने सब प्रकार की खबरों को प्राप्त करने के लिए गुप्तचरों और स्वयंसेवकों की ऐसी व्यवस्था की कि सरकारी कर्मचारी किसानों को दबाने के लिए जो कोई भी चाल सोचते उसकी खबर तुरंत "स्वराज्य आश्रम" में पहुँच जाती थी और वहाँ से उसे उसी समय छापकर तमाम गाँवों में फैला दिया जाता था। आंदोलन के सभी प्रमुख समाचार प्रतिदिन 'सत्याग्रह समाचार' में छापकर वितरित किए जाते थे।

अब समस्त देश में बारदौली का नाम और यश छा गया। प्रत्येक समाचार पत्र के कॉलम वहाँ के समाचारों से भरे रहते थे। अंग्रेजों के समाचार पत्रों में वे समाचार यद्यपि निंदा के रूप में छापते थे, पर उनके द्वारा बारदौली के आंदोलन का नाम विदेशों में भी पहुँच गया। मालवीय जी और लाजपतराय जैसे भारतपूज्य नेता भी उसका समर्थन करने लगे। बंबई विधान सभा के ५५ भारतीय सदस्यों ने सरकार की दमन नीति के विरोध में त्याग-पत्र दे दिये। पं० हृदयनाथ कुँजरू, श्री अमृतलाल ठक्कर, जमनालाल जी बजाज आदि ने बारदौली जाकर वहाँ की स्थिति को अच्छी तरह देखा, और उसकी जाँच की। सबने सरकार की निंदा की और उसको चेतावनी दी कि उसे अन्याय बंद करके किसानों की उचित माँगों को स्वीकार करना चाहिए, अन्यथा इसका परिणाम उसके लिए हितकर नहीं हो सकता।

जब सरकार जब्ती, कुर्की, नीलामी, मार-पीट आदि सब उपाय करके थक गई और किसान टस से मस न हुए तो उसने अपनी हार स्वीकार कर ली और बंबई के गवर्नर ने सरदार पटेल को समझौते के संबंध में बातें करने को बुलाया। सरकार की तरफ से यह वायदा किया गया कि सरकार उचित मामलों की जाँच करके बढ़े हुए लगान को माफ कर देगी। इसके बदले में सरकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहती थी कि सत्याग्रह आंदोलन बंद कर दिया जाए और लोग पहले की तरह स्वेच्छा से लगान देने लगें। सरदार ने जिन लोगों की जमीन और माल जब्त किया गया था, उसको वापस करने की माँग की। साथ ही यह भी कहा कि प्रजा का साथ देने के कारण जिन पटेलों तथा तलाटियों (पटवारियों) को नौकरी से अलग कर दिया गया था, उनको उसी पुरानी तारीख से नौकरी पर माना जाए। कहना न होगा कि ये सभी माँगें स्वीकार कर ली गईं। बारदौली की विजय का संपूर्ण देश में बड़ी धूमधाम से स्वागत किया गया और एक कवि ने 'गीता' के शब्दों में घोषित किया—

यत्र योगेश्वरो गाँधी वल्लभश्च धूर्धुरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

सरदार पटेल का घर जेल में—

पटेल साहब बड़े नामी बैरिस्टर और कानून की बारीकियों को जानने वाले थे। इसलिए उन्होंने इतने बड़े-बड़े आंदोलन करके भी सरकार को इस बात का मौका न दिया कि वह उनके विरुद्ध कोई कानूनी कार्रवाई कर सके। इधर बारदौली सत्याग्रह ने उनको प्रांतीय नेता के पद से उठाकर अखिल भारतीय नेता के मंच पर खड़ा कर दिया और उधर गांधीजी ने अपनी तैयारियाँ पूरी करके तथा सरकार को अपनी हठधर्मी पर कायम देखकर कानून-भंग सत्याग्रह का शंखनाद कर दिया। उन्होंने सरकार को चुनौती दी कि अगर सरकार भारतीयों की स्वराज्य की माँग के प्रति उपेक्षा का ही भाव प्रकट करती है तो वे भी उसकी सत्ता को न मानकर उसके बनाये कानूनों का उल्लंघन करेंगे। इसके लिए नमक-कानून चुना गया और गांधी जी ने घोषणा की कि वे १२ मार्च, १९३० को अहमदाबाद से एक सत्याग्रही टोली के साथ पैदल रवाना होंगे और दांडी नामक स्थान में पहुँचकर सरकारी हुक्म के विरुद्ध नमक बनायेंगे। इस पर सरदार पटेल उनसे पहले ही दांडी-यात्रा के मार्ग में पड़ने वाले गाँवों में प्रचार करने पहुँच गये, जिससे गांधी जी की यात्रा पूर्ण सफल हो। सरकार बारदौली के अनुभव से जान चुकी थी कि गुजरात की ग्रामीण जनता पर पटेल जी का कितना प्रभाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है और किस प्रकार वह निस्संकोच उनके पीछे चलने को तैयार हो जाती है। इसलिए जैसे ही वे दो-चार दिन प्रचार करते हुए 'रास' नामक स्थान में पहुँचे तो जिला के कलेक्टर ने उनके भाषण पर प्रतिबंध लगा दिया। पर अब तो सत्याग्रह की घोषणा हो ही चुकी थी, इसलिए उन्होंने सरकारी हुक्म को मानने से इनकार कर दिया और गाँधी जी की यात्रा आरंभ होने के चार दिन पूर्व ही गिरफ्तार करके जेल भेज दिये गए। चार मास पश्चात् जब वे यरवदा जेल से अपनी सजा पूरी करके बाहर निकले तो देश में घोर सत्याग्रह संग्राम छिड़ा हुआ था और हजारों सत्याग्रही सैनिक जेलखानों को भर रहे थे। सरकार एक आर्डीनेंस निकालकर कांग्रेस की समस्त संगठन को गैर कानूनी घोषित कर चुकी थी और कांग्रेस के अध्यक्ष होने के नाते पं० जवाहरलाल नेहरू और उनके पिता पं० मोतीलाल नेहरू गिरफ्तार किये जा चुके थे। पं० मोतीलाल जी जेल जाते हुए सरदार पटेल को अपना स्थानापन्न नियुक्त कर गये थे। इसलिए २६ जून १६३० को जेल से बाहर आते ही वे कांग्रेस संगठन को सुदृढ़ करने और सत्याग्रह-संग्राम को तीव्र करने में संलग्न हो गये। गुजरात के बारदौली और बोरसद तालुकाओं को उन्होंने सत्याग्रह की जो शिक्षा दी थी, वह इस समय काम आई। वहाँ के किसानों ने करबंदी का ऐसा घोर आंदोलन किया कि सरकार घबरा गई। उसने भी पुलिस और फौज द्वारा अंधाधुंध दमन आरंभ कर दिया। फलस्वरूप ८० हजार किसान ब्रिटिश भारत के गाँवों को छोड़कर आसपास बड़ौदा रियासत के गाँवों में चले गये, पर उन्होंने सरकारी आदेशों को नहीं माना।

सरदार पटेल जानते थे कि वे भी ज्यादा दिन जेल से बाहर नहीं रह सकते। इसलिए उन्होंने जहाँ तक संभव हो सकता था कांग्रेस के प्रत्यक्ष्य और अप्रत्यक्ष संगठन को मजबूत किया और अपने पश्चात् कितने ही अन्य नेताओं को नामजद कर दिया कि एक के गिरफ्तार होने के बाद दूसरा अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद का कार्य संचालन करता रहे। इसके पश्चात् १ अगस्त को लोकमान्य तिलक की संवतसरी के जुलूस का नेतृत्व करते हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे गिरफ्तार कर लिए गये और तीन महीने के लिए फिर जेल भेज दिये गये।

इस प्रकार वे राष्ट्रीय संग्राम के अग्रिम मोर्चे पर डटकर बार-बार सरकार के प्रहारों को झेलते रहे। यद्यपि जेल के कष्टों से उनका स्वास्थ्य खराब हो गया, पर बीमारी की दशा में भी उन्होंने बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण कार्यों को पूरा किया और अंत में सन् १९३६-३७ में वह समय आ गया, जब सरकार कांग्रेस की शक्ति के सामने बहुत झुक गई और भारत के अधिकांश प्रांतों में कांग्रेस के चुने हुए प्रतिनिधि शासन-संचालन करने लगे। इस समस्त शासनों का सूत्र सरदार पटेल के ही हाथों में था और वे ही 'पार्लामेंटरी बोर्ड' के अध्यक्ष थे, जो विधान सभाओं के लिए कांग्रेसी उम्मीदवारों तथा मंत्रिमंडलों के प्रमुख मंत्रियों का निर्णय करता था। यद्यपि सन् १९३९ में द्वितीय योरोपीय महायुद्ध आरंभ हो जाने पर कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस्तीफे दे दिये, पर इस ढाई वर्ष के बीच में ही उन्होंने राष्ट्रीय प्रगति की दृष्टि से जो विशेष कार्य किये, उनसे कांग्रेस की सामर्थ्य का सिक्का देश और विदेशों में अच्छी तरह जम गया।

सन् १९४२ का विद्रोह—

कांग्रेसी मंत्रिमंडलों के भंग किये जाने के बाद देश में फिर सरकार विरोधी आंदोलन जोर पकड़ने लगा। अब कांग्रेस की शक्ति काफी बढ़ गई थी और अनेक लोगों की दृष्टि में वह भारत की अप्रत्यक्ष शासनकर्ता बन चुकी थी। भारतीय सरकारी कर्मचारियों का भी मनोभाव बदलता जा रहा था। वे जानते थे कि देश की जनता कांग्रेस के साथ है और वह किसी भी दिन शासन की बागडोर ग्रहण कर सकती है। इसलिए अब कांग्रेसी नेताओं के परामर्श और भावी कार्यक्रम इसी दृष्टिकोण को लेकर होते थे कि भारत का शासन भारतीय जनता के प्रतिनिधियों की दृष्टि से किस प्रकार चलाया जाए ? उन्होंने माँग की कि भारत सरकार को अपने युद्ध संबंधी निर्णयों में भारतीय जनता के प्रतिनिधियों की सम्मति लेनी चाहिए अन्यथा हम युद्ध का विरोध करेंगे। जब ब्रिटिश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सरकार ने इस बात पर कोई ध्यान न दिया तो कांग्रेस की कार्य-समिति ने 'युद्ध विरोधी सत्याग्रह' आरंभ कर दिया। इसमें गांधी जी द्वारा चुने हुए व्यक्तियों को एक-एक करके युद्ध विरोधी भाषण करके जेल जाना था। सबसे पहला सत्याग्रही होने का गौरव विनोबा भावे को दिया गया, क्योंकि गांधीजी की दृष्टि में वे आदर्श अहिंसावादी और सत्याग्रह के मर्म को समझने वाले व्यक्ति थे। इस संबंध में गुजरात और सौराष्ट्र को विशेष रूप से तैयार करने के लिए सरदार पटेल विभिन्न स्थानों का दौरा करने लगे और जनता को अपने जन्मसिद्ध अधिकार 'स्वराज्य' के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो जाने को समझाने लगे। उन्होंने कहा—

"राष्ट्रीय भावना को संसार की कोई शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। ब्रिटिश सरकार पूछती है कि—'यदि वे इस देश को छोड़कर चले जायें तो हमारा क्या बनेगा ?" निश्चय ही यह एक विचित्र प्रश्न है। यह ऐसा प्रश्न है जैसे चौकीदार अपने स्वामी से कहे कि 'यदि मैं चला जाऊँ तो आपका क्या होगा ?' इसका उत्तर यही होगा कि—'तुम अपना रास्ता नापो। या तो हम दूसरा चौकीदार रख लेंगे या हम अपनी रखवाली आप करना सीख जायेंगे।' पर हमारा यह चौकीदार जाता नहीं, वरन् मालिक को ही धमकाता है।"

सरदार पटेल ने भी १७ नवंबर १९४० को व्यक्तिगत सत्याग्रह करने की घोषणा की। पर पुलिस ने दिन निकलने से पहले ही उनको गिरफ्तार कर लिया। पर जेल में वे बीमार हो गये और उनका आँतों का रोग ऐसे भयंकर रूप में उभर आया कि मृत्यु की आशंका होने लगी। सरकारी डॉक्टरों ने इसका इलाज ऑपरेशन करना बताया। पर यह ऑपरेशन भी इतना भयंकर होने को था कि उसमें जान की जोखिम का प्रश्न था। सरकारी अधिकारियों ने इस जिम्मेदारी से बचने के लिए सरदार को नौ-दस महीने बाद ही जेल से छोड़ दिया। बाहर आने पर जब उनके निजी डॉक्टरों ने जाँच की तो उन्होंने ऑपरेशन के बजाय दवाओं का प्रयोग करने की सम्मति दी। कई महीने तक ऐलोपैथिक और होम्योपैथिक चिकित्सक दवाएँ देते रहे, पर किसी से विशेष लाभ न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ। तब गाँधी जी ने उनको सेवाग्राम (वर्धा) बुलाकर प्राकृतिक चिकित्सा की सलाह दी। प्राकृतिक चिकित्सा से हालत में काफी सुधार हुआ, पर उस समय निरंतर बदलने वाली राजनीतिक परिस्थितियों के कारण उनका एक स्थान पर जमकर कई महीने तक रह सकना असंभव था। इसलिए दो महीने तक वर्धा में रहकर वे पुनः अपने कार्य क्षेत्र में आ गए।

"अंग्रेजों भारत छोड़ो"—

अब कांग्रेस के मुख्य नेताओं की दृष्टि में वह समय आ गया था, जब उनको अंतिम रूप से स्वतंत्र होने का निश्चय करके अंग्रेजों से खुले तौर पर कह देना चाहिए कि—"आप यहाँ से चले जायें।" जबान से तो इन शब्दों को कहना कोई कठिन काम न था और सभी उग्र राजनीतिज्ञ बरसों से यही कह रहे थे। पर इस बार केवल मुँह से कह देने की बात न थी, वरन् निश्चय किया गया था कि जो कुछ कहा जाये, उसे कार्य रूप में भी परिणत किया जाये। इस संबंध में कांग्रेस कार्य समिति की जो बैठक जुलाई १९४२ में हुई उसमें देश को एक नया आदेश देने का प्रस्ताव पास किया गया, जिसका सारांश था—'अंग्रेजों चले जाओ !' यद्यपि इस उद्देश्य को किस विधि से पूरा किया जाये ? इस संबंध में सब नेताओं के मनोभाव एक से न थे तो भी वर्धा में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया और यह निश्चय किया गया कि ९ अगस्त को बंबई में "अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी" की बैठक करके इसकी पुष्टि कराई जाये और देश भर में एक विशाल आंदोलन खड़ा कर दिया जाये, जिसे सरकार सँभाल न सके। नेताओं में से कुछ के मन में अभी तक अहिंसात्मक सिद्धांत की भावना काम कर रही थी, पर सरदार पटेल अब देशव्यापी क्रांति के लिए ही तैयार हो गये। उस समय देश का वातावरण ऐसा गर्म हो गया था कि किसी को यह भरोसा न था कि किस समय देश में अशांति का दौरदौरा हो जायेगा अथवा किस समय सरकार का दमनचक्र चल पड़ेगा और सब राजनीतिक कार्यकर्ताओं को युद्ध संबंधी आर्डिनेंस के अंतर्गत एक ही दिन गिरफ्तार करके जेल के सीखचों में बंद कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया जायेगा। सरदार पटेल अपनी मानसिक स्थिति के कारण इस बात को बहुत अच्छी तरह समझते थे, इसलिए उन्होंने एक दिन का समय भी न खोकर वर्धा से लौटते ही अहमदाबाद की एक लाख व्यक्तियों की विराट् सभा में अपना संदेश कह सुनाया—

"ऐसा समय फिर नहीं आयेगा। आप मन में भय न रखें। किसी को यह कहने का मौका न मिले कि गांधीजी अकेले थे। जब वे ७४ वर्ष की आयु में हिंदुस्तान की लड़ाई-लड़ने के लिए, उसका भार उठाने के लिए निकल पड़े हैं, तब हमें भी समय का विचार कर लेना चाहिए। आपसे माँग की जाए या न की जाए, समय आये या न आये, किंतु अब आपके लिए कुछ पूछने की बात नहीं रह जाती। सन् १९१६ में रॉलट एक्ट के विरोध से लेकर अब तक जितने भी कार्यक्रम रहे हैं, उन सबका समावेश इसमें हो जायेगा। 'टैक्स मत चुकाओ आंदोलन', 'कानून-भंग' और इसी तरह की दूसरी लड़ाइयाँ जो सीधे रूप में सरकारी शासन के बंधन तोड़ने वाली हैं, उन्हें कांग्रेस अपना लेगी। रेलवे वाले रेलें बंद करके, तार विभाग वाले तार विभाग बंद करके, डाकखाने वाले डाक का काम छोड़ कर, सरकारी नौकर अपनी नौकरियाँ छोड़कर और स्कूल, कॉलेज बंद करके सरकार के तमाम यंत्रों को स्थगित कर दिया जाए। यह लड़ाई इसी किस्म की होगी। इसमें आप सब भाई साथ दीजिए। इसमें आपका हार्दिक सहयोग होगा तो यह लड़ाई थोड़े ही दिनों में खत्म हो जायेगी और अंग्रेजों को यहाँ से चला जाना पड़ेगा। काम करने वालों को सरकार पकड़ भी ले, तो हर एक हिंदुस्तानी अपने आपको कांग्रेसी समझे और उसी तरह अपना फर्ज अदा करे। अगर वह पुकार होते ही लड़ने को तैयार हो जाए, तो स्वतंत्रता हमारा दरवाजा खटखटाती हुई आकर खड़ी हो जायेगी।"

इन बातों को सरदार पटेल ने कई सभाओं में दुहराया और इस प्रकार अपने साथियों और अनुयायियों को आगामी देशव्यापी विद्रोह का संकेत देकर वे एक अगस्त को ही बंबई चले गये और वहाँ उन्होंने चौपाटी पर सार्वजनिक सभा में अपने अहमदाबाद वाले संदेश को और भी संक्षिप्त और स्पष्ट करते हुए कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"आपको यही समझकर यह लड़ाई छेड़नी है कि महात्मा गांधी और सभी वरिष्ठ नेताओं को पकड़ लिया जायेगा। गांधी जी को पकड़ा जाये तो आपके हाथ में ऐसा करने की ताकत है कि २४ घंटे में ब्रिटिश सरकार का शासन समाप्त हो जाए। आपको सब कुंजियाँ बात दी गई हैं, उनके अनुसार अमल कीजिये। सरकार का शासन चलाने वाले अगर सभी लोग हट जायें तो सारा शासन भंग हो जायेगा।"

७ और ८ अगस्त की कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में तो गांधी जी के 'अंग्रेजों चले जाओ' प्रस्ताव का समर्थन करते हुए सरदार पटेल ने जो कुछ कहा वह एक प्रकार से अगले दिन ९ अगस्त से आरंभ होने वाले विद्रोह का श्रीगणेश करना ही था। उन्होंने कांग्रेस के अहिंसा सिद्धांत का जिक्र करते हुए कहा—

"लड़ाई के समय हमारा कार्यक्रम हमेशा गांधी जी ने तैयार किया है। जब तक वे बैठे हैं, वे जो हुक्म देंगे वही हम मानेंगे। नरम हो या गरम, जो वे कहें वही करना सिपाहियों का काम है। हमें बड़ी-बड़ी धमकियाँ दी जा रही हैं। हुकूमत का तरीका सबको मालूम है। वह सबको पकड़ेगी। बहुत-सी सूचियाँ और आर्डिनेंस तैयार किये गये हैं और तैयार किये जायेंगे। वह तो पिछली लड़ाइयों के समय से दफ्तरों में तैयार रखे थे, उनमें नई बात क्या है ? मगर हमें अपनी जिम्मेदारी सोच लेनी है, समझ लेनी है। जब तक गांधी जी मौजूद हैं, तब तक वे जो हुक्म दें, जो हिदायत जारी करें, एक के बाद एक जो कदम उठाने को कहें, वही उठाना है, न जल्दबाजी की जाय, न पीछे रहा जाय। हर एक व्यक्ति को आज्ञा और अनुशासन का पालन करना है लेकिन मान लीजिये सरकार ने ही कुछ किया, सबको पहले से ही पकड़ लिया तो क्या किया जाये? ऐसा हो, अगर सरकार गांधी जी को पकड़ ले तो ऐसे मौके पर कदम-कदम की बात नहीं हो सकती। फिर तो हर एक हिंदुस्तानी का, जिन्होंने इस देश में जन्म लिया है उन सबका—यह फर्ज होगा कि अपने देश की आजादी तुरंत हासिल करने के लिए उसे जो सूझे वही कर डाले। जो यहाँ बैठे हैं, वे सब इतनी बात यहीं से लेते जायें। जब तक गांधी जी हैं, वे हमारे सेनापति हैं, परंतु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह पकड़े जायें तो किसी की जिम्मेदारी किसी पर नहीं रहेगी। सारी जिम्मेदारी अंग्रेजों के सिर रहेगी। अराजकता की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर होगी। अराजकता का डर अब देश को नहीं रोक सकेगा।"

"अखबारों के साधारण पाठक सन् १९४२ के विद्रोह के समय समझते थे कि ये दुर्घटनायें नेताओं की गिरफ्तारी से उत्तेजित होकर की जा रही हैं। पर सरदार पटेल के ऊपर दिये उद्‌गार साफ बतलाते हैं कि विद्रोह की योजना पहले ही निश्चित कर ली गई थी और सभी नेताओं को उसका पता था। पर सरदार पटेल तो उसके लिए पूरी तरह तैयार थे और उनको आगामी सप्ताह में ही होने वाली तोड़-फोड़ और घोर अशांति का अच्छी तरह पता था। उन्होंने अपने अहमदाबाद के भाषण में जो रेल, तार, डाक आदि के बंद हो जाने का संकेत किया तो लोगों ने भी विद्रोह के पहले ही दिन इन्हीं को रोकने की व्यवस्था की। उस दिन समस्त देश में सैकड़ों स्थानों पर रेल की पटरियाँ उखाड़ी गईं, तार काटे गये और डाकखाने जलाये गये। जनता के बड़े-बड़े दलों ने अनेक कस्बों तथा छोटे नगरों के कलेक्टरों के कार्यालय और खजानों पर हमला किया और बहुत से स्थानों में दो-चार दिन के लिए अपनी 'सरकार' भी कायम कर दी। पर सरदार पटेल को अपनी जनता की शक्ति का पूरा अनुमान था। इसलिए उन्होंने गिरफ्तारी से कुछ समय पहले ही कह दिया था "बस, हमारी क्रांति सात दिन की होगी। इसमें जो कुछ कर सकते हो बड़ी तेजी से कर डालो।"

क्या यह एक आश्चर्य की बात नहीं है कि देश को स्वतंत्र कराने का इतना बड़ा काम एक ऐसे व्यक्ति ने किया, जिसका स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था, आंतरिक अंगों में खराबी आ जाने से जो सदैव रोगी ही बने रहते थे ? अहमदनगर के जेलखानों में भी वे अपने जीवन से निराश थे। हमेशा परहेज करते रहने की जिंदगी उनको पसंद नहीं आती थी तो भी देश की खातिर वे सब कुछ चुपचाप सहन करते रहे और उसी रोगी शरीर का भार ढोते हुए, भारत को एक सुदृढ़ राष्ट्र बनाने का सर्वोच्च कार्य पूरा कर गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महापुरुषों का यही लक्षण होता है कि वे परमार्थ के लिए स्वार्थ को छोड़ सकने की पूरी सामर्थ्य रखते हैं।

जानकार लोगों का कहना है कि यद्यपि कांग्रेस कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से 'अंग्रेजों चले जाओ' वाला प्रस्ताव पास किया था। पर आपस के वाद-विवाद में मौलाना-आजाद, डॉ० सैयद महमूद और आसफअली की राय यह थी कि महात्मा गांधी और कांग्रेस को यह आंदोलन आरंभ नहीं करना चाहिए था। नेहरू जी और पंत जी भी कुछ अंशों में इस मत के समर्थक थे। इन लोगों का कहना था कि इस प्रकार के आंदोलन से अमेरिका और चीन, जो भारत को स्वतंत्र किये जाने के पक्ष में हैं, हमसे सहानुभूति न रखेंगे। वे हमारे इस कार्य को इस निगाह से देखेंगे कि मानो हम युद्ध-प्रयत्नों में बाधा डाल रहे हैं और इस प्रकार हिटलर की सहायता कर रहे हैं। पर सरदार पटेल का मत इसके विपरीत था और वे अंत तक १९४२ के 'अंग्रेजों चले जाओ' आंदोलन का पूर्ण रूप से समर्थन करते रहे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्—

यद्यपि स्वतंत्रता-संग्राम में सरदार पटेल ने जितने महत्त्वपूर्ण कार्य किये उनका महत्त्व देश के किसी अन्य नेता के कार्यों से न्यून न था, पर स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने के पश्चात् कांग्रेस के सामने जो परीक्षा की घड़ी आई कि वह शासन-संचालन कर सकने की योग्यता रखती है या नहीं, उस समय लोगों ने उनकी वास्तविक शक्ति और योग्यता का अनुभव किया। पाकिस्तान के बनते ही वहाँ के हिंदुओं पर जो आपत्ति आई और लाखों व्यक्ति घरबार छोड़कर प्राण बचाने के लिए भारत में चले आये, उनकी सुरक्षा और पुनर्वास की व्यवस्था करना एक बड़ी विकट समस्या थी। एक तरफ देश में जगह-जगह हिंसा और खून-खराबी का तांडव हो रहा था और दूसरी ओर लाखों बेघरबार के व्यक्ति स्त्री-बच्चों को लेकर नगर की सड़कों पर पड़े थे। चारों तरफ भयंकर और निराशापूर्ण दृश्य दिखाई पड़ रहे थे और लोग सोचने लगे थे कि इससे तो अंग्रेजों का राज्य ही अच्छा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर सरदार पटेल, जिनके ऊपर गृह विभाग के मंत्री की हैसियत से इन सब समस्याओं को सुलझाने की जिम्मेदारी थी, जरा भी न घबड़ाये और उन्होंने अपने अदम्य साहस और विलक्षण बुद्धि से कुछ ही दिनों में शांति और सुव्यवस्था स्थापित करके देश को प्रगति के मार्ग पर गतिशील कर दिया। जो पंजाबी बंधु शरणार्थी के रूप में एक भार की तरह प्रतीत होते थे, वे ही थोड़ी-सी आवश्यक सहायता और साधन मिल जाने पर 'पुरुषार्थी के रूप में परिवर्तित हो गये। दूसरी काली घटा देशी रियासतों की तरफ से उठी, जहाँ सभी अपने को 'खुदमुख्तार' समझने लगे थे। वास्तव में अगर स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने के बाद भी भारत पूर्ववत् सात सौ हिस्सों में बँटा रहता तो उस स्वतंत्रता का मूल्य बहुत कम हो जाता और वे रियासतें कदम-कदम पर देश की प्रगति में रोड़ा अटकाने वाली ही सिद्ध होतीं। पर सरदार ने ऐसा चमत्कार कर दिखाया कि एक वर्ष के भीतर ही अधिकांश रियासतें स्वेच्छा से भारतीय संघ में विलीन होकर उसका एक उपयोगी अंग बन गईं।

गांधी जी की हत्या उस युग की सबसे अधिक सनसनी की घटना थी। कुछ लोगों ने उसके संबंध में सरदार पटेल पर भी दोष लगाया कि उन्होंने गांधी जी की रक्षा में अकर्मण्यता दिखलाई। कुछ लोगों ने घुमा-फिराकर यहाँ तक शंका प्रकट की कि श्री पटेल ने जान-बूझकर ऐसी घटना हो जाने दी ! पर जो लोग गांधी जी और पटेल के संबंधों को जानते थे और उनके मनोभावों से परिचित थे, उन्होंने इस प्रकार की आशंका को भी 'शत्रुओं' का कार्य बतलाया। इसमें एक भेद की बात यह थी कि पटेल 'हिंदुत्व' के समर्थक अवश्य थे और जवाहरलाल जी नेहरू 'असांप्रदायिकता' के जरूरत से ज्यादा पक्षपाती हो जाते थे, इससे इन दोनों में शासन संबंधी मामलों में कुछ मतभेद बना रहता था। अनेक अवसरों पर मंत्रिमंडल के कुछ सदस्य, जिनमें मौलाना आजाद और हुमायूँ कबीर का नाम लिया जाता है, इस मतभेद को बढ़ाने और प्रधानमंत्री को अपने अनुकूल करने की चेष्टा करते रहते थे। ऐसे ही लोग और उनके दल वाले सरदार पटेल पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में तरह-तरह के आक्षेप लगाकर उनके महत्त्व को घटाने की चेष्टा किया करते थे, पर जनता में सरदार का इतना अधिक प्रभाव था कि कोई उनका कुछ बिगाड़ न सका।

इधर सरदार को किसी प्रकार के मंत्री-पद की कुछ परवाह भी न थी। उनकी खरी देशभक्ति और साहसपूर्ण कारनामों ने उनको इतना लोकप्रिय बना दिया था कि वे जिस स्थिति में रहते देश पर उनका प्रभाव अद्वितीय रूप में बना रहता। जब उन्होंने कुछ लोगों को अपने विरुद्ध जवाहरलाल जी के कान भरते देखा तो उसी ३० जनवरी, १९४८ को, जिस दिन संध्या के ५ बजे गांधी जी की हत्या की गई, दोपहर के समय गांधी जी से भेंट की थी और अनुरोध किया था कि वे उनको मंत्री-पद से त्याग पत्र देने की अनुमति दे दें। उनकी यह बात सुनकर गांधी जी ने उनके सामने अपना हृदय खोलकर रख दिया। उन्होंने कहा—"पहले मेरा विचार होता था कि नेहरू और पटेल में से कोई एक मंत्रिमंडल से पृथक् हो जाय। पर अब स्थिति को देखते हुए मैं इस दृढ़ निश्चय पर पहुँचा हूँ कि मंत्रिमंडल में दोनों का रहना आवश्यक है। लार्ड माउंटबेटन ने भी मुझसे जोर देकर कहा था कि राष्ट्रहित की दृष्टि से दोनों का रहना अनिवार्य है। मैं आज प्रार्थना के पश्चात् इसी विषय पर भाषण करूँगा।" पर उनको उस संबंध में कुछ कहने का अवसर ही न मिला, क्योंकि प्रार्थना सभा में घुसते ही एक आततायी ने उनको गोली मार दी। श्री पटेल ने बातचीत के अंत में गांधी जी का आग्रह देखकर यह वचन दे दिया था कि वे मंत्री बने रहकर नेहरू जी को सदापूर्ण सहयोग देते रहेंगे।"

गांधी जी की मृत्यु होने पर सरदार पटेल को इतना मानसिक धक्का लगा कि उनकी स्वाभाविक हँसी बिल्कुल गायब हो गई और बीस दिन के भीतर ही उनको हृदय रोग हो गया। यह देखकर उनकी पुत्री मणिबेन को महादेव भाई की डायरी के ये शब्द याद आने लगे कि—"सरदार ने गांधी जी से कहा था कि आपके स्वर्गवास के पश्चात् मेरी भी जीने की इच्छा नहीं है। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि हम दोनों की मृत्यु साथ-साथ हो।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो सच्चे और राष्ट्र-सेवक मित्र—

नेहरू जी और सरदार पटेल के मतभेद की यह कहानी बड़ी दिलचस्प और साथ ही शिक्षाप्रद भी है। इसका विश्लेषण करने से हम जान सकते हैं कि 'गीता' में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को अनासक्त कर्मयोग का जो उपदेश दिया था, उसका पालन किस प्रकार किया जाता है। वास्तव में नेहरू जी और पटेल साहब दोनों ही इतने महान् व्यक्ति थे कि देश का शासन-संचालन करना उनके लिए कठिन न था। पर दोनों में एक-एक गुण की प्रमुखता थी, जिसे देखकर महामानव गांधी जी ने नेहरू जी को अंतर्राष्ट्रीय और पटेल जी को राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के लिए अधिक उपयुक्त समझा। सरदार पटेल नेहरू जी से चौदह वर्ष बड़े थे और राष्ट्रीय संग्राम में उनकी सेवाएँ भी कम न थीं, पर गांधी जी के भाव को समझकर उन्होंने नेहरू जी को प्रधानमंत्री और स्वयं उपप्रधानमंत्री रहना स्वीकार किया। इन दोनों का यह सहयोग भारतीय इतिहास में ही नहीं संसार के इतिहास में भी महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। यदि हम चाहें तो इसकी तुलना 'गीता' के धनुर्धर अर्जुन और सारथी कृष्ण से भी कर सकते हैं। तभी इसका जिक्र करते हुए 'भारतीय कांग्रेस' के इतिहास लेखक तथा सुप्रसिद्ध राजनीतिक नेता डॉ० पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा था—

"इस बात पर प्रायः आश्चर्य प्रकट किया जाता है कि यदि हम इन दोनों विरोधियों का सहयोग इतना सुखदायक, इतना उपयुक्त और इतना एकाकार न होता तो दिल्ली की केंद्रीय सरकार की कैसी दशा होती ? यदि दो मित्र एक-दूसरे की बात को हमेशा काटते रहें तो उनका सहयोग आदर्श नहीं हो सकता। यदि दो साथी एक-दूसरे के ऊपर सदा आक्रमण करते रहें तो वे कोई उन्नति नहीं कर सकते हैं और न कोई निर्णय कर सकते हैं। पर हमारे यह दोनों नेता बिल्कुल भिन्न प्रकार के हैं। अतएव हमको उनकी पृथक्-पृथक् विशेषताओं को समझना चाहिए, जिसके कारण वे एक-दूसरे को उपयोगी सहयोग देते रहें।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह कहना तो अतिशयोक्ति होगी कि सरदार पटेल और नेहरू जी का दृष्टिकोण एक था, किंतु वे विभिन्नता में भी एकता के अद्‌भुत उदाहरण थे। एक हाथ की कोई भी दो अँगुलियाँ एक जैसी नहीं होतीं। एक माता-पिता की संतान कोई दो भाई एक जैसा न तो सोचते, न अनुभव करते और न कार्य करते हैं। एक-दूसरे से मतभेद रखना और भिन्न-भिन्न मार्ग पर चलना स्वाभाविक है। हमारे इन दोनों नेताओं के मतभेद केवल अपनी-अपनी प्रकृति के कारण ही नहीं थे, वरन् भारत सरकार में अपने-अपने विभागों के कारण भी थे। गृहमंत्री को आंतरिक सुरक्षा तथा शांति की उच्चतम भावना को बनाये रखना पड़ता है, जबकि प्रधानमंत्री को किसी विशेष मामले या स्वीकृत नीति के संबंध में विदेशों की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखना पड़ता है। पर हमारे पूज्य सरदार और प्यारे नेहरू दोनों ने ही सहयोग कला में अपनी उच्च योग्यता का परिचय दिया।"

इन दोनों महान् नेताओं का सहयोग व्यावहारिक रूप में किस प्रकार प्रकट हुआ, यह कांग्रेस के एक उच्च कार्यकर्ता तथा सभी नेताओं से संपर्क रखने वाले श्री हरिभाऊ उपाध्याय के इस लेखांश से विदित हो सकता है—

पं० जवाहरलाल नेहरू तथा सरदार के मिजाज में बहुत अंतर था। यहाँ तक कि उन दोनों की कार्यप्रणाली भी एक-दूसरे से भिन्न प्रकार की थी, किंतु भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् सरदार नेहरू जी को अपना नेता मानने लगे थे। इसके बदले नेहरू जी सरदार को परिवार का सबसे वृद्ध पुरुष मानते थे। दोनों के मतभेद के विषय में प्रायः अफवाहें फैल जाती थीं और विभेदात्मक नीति वाले अत्यंत प्रसन्न होकर उनमें फूट पड़ जाने की आशा करने लगते थे, किंतु सरदार ने कभी पानी को सिर से ऊपर नहीं निकलने दिया। यदि कोई उन दोनों में से किसी की भी नीति पर आक्रमण करता तो उक्त आलोचक को वह दोनों फटकार देते। वे दोनों एक-दूसरे के कवच थे। एक कांग्रेसी कार्यकर्ता ने, जिसे सरदार का विश्वस्त समझा जाता था, बतलाया कि—"सरदार ने मुझसे अपनी मृत्युशैय्या पर गुप्त रीति से कहा था कि हमको नेहरू जी की अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए, क्योंकि मेरी मृत्यु से उनको बहुत दुःख होगा।" इसी प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की घटना नेहरू जी की भी है। सरदार पटेल अपने व्यंग के लिए प्रसिद्ध थे और एक दिन नेहरू जी भी उनके व्यंग के शिकार हो गये। उस समय उपस्थित एक मित्र ने इसका जिक्र नेहरू जी से कर दिया, तो नेहरू जी ने उत्तर दिया—"इसमें क्या बात है ? आखिर एक बुजुर्ग के रूप में उनको हमारी हँसी उड़ाने का पूर्ण अधिकार है। वे हमारी चौकसी करने वाले हैं।" नेहरू जी के उत्तर से लाजवाब होकर वे सज्जन शीघ्र ही वहाँ से चले गये।

भारतीय राष्ट्र का निर्माण करने वाले इन दोनों महापुरुषों की महिमा इतनी अधिक है कि बहुत वर्ष बीत जाने पर भी लोग उनका स्मरण करते रहेंगे। आज भी किसी राष्ट्रीय संकट के समय जनता सरदार पटेल की याद करती है। इसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के गंभीर हो जाने पर लोग नेहरू जी को याद करते रहते हैं। वर्तमान समय के खाने-कमाने वाले नेताओं से उनकी कोई तुलना नहीं की जा सकती। उनको राजनीतिक नेता के बजाय राजनीतिक तपस्वी कहना अधिक उचित होगा। उन्होंने देश के लिए कितना त्याग और कष्ट सहन किया, इसे सब कोई जानते हैं। उनका बड़े से बड़ा विरोधी यह नहीं कह सका कि, उन्होंने इन कार्यों से किसी प्रकार का निजी लाभ उठाया। यदि अन्य व्यक्तियों की तरह ये भी अपना धंधा करते रहते तो सहज में धनीमानी बनकर खूब आराम का जीवन बिता सकते थे। पर इसके बजाय उन्होंने दिन-रात कठिन परिश्रम करके बदले में जेल का जीवन व्यतीत किया और जान-बूझकर हर तरह की हानि उठाई। प्रत्येक 'नेता' कहे जाने वाले को इस कसौटी पर किसी हद तक खरा उतरना ही चाहिए।

सरदार पटेल राष्ट्रभक्त होने के साथ ही भारतीय संस्कृति के भी महान् पृष्ठपोषक थे। वे सदा अत्यंत सादी देशी ढंग की वेशभूषा में रहते थे और घर का वातावरण प्राचीन ढंग का ही रखते थे। भारत का बँटवारा हो जाने के पश्चात् नवंबर १९४७ में जब वे सौराष्ट्र का दौरा करने गये तो आरंभिक मुसलमान आक्रमणकारियों द्वारा तोड़े गये सोमनाथ के मंदिर को भी देखा। उसकी दुर्दशा देखकर उनको हार्दिक कष्ट हुआ और उसी समय उसके पुनः निर्माण का संकल्प कर लिया। सरदार की अपील पर बहुत थोड़े समय में ही देश के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभी भागों से एक बड़ी धनराशि इकट्ठी हो गई और सौराष्ट्र के राजप्रमुख जामसाहब की अध्यक्षता में ट्रस्टियों का एक बोर्ड मंदिर के निर्माण कार्य की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया गया। कहना न होगा कि मंदिर पुनः भारत के गौरव के अनुरूप तैयार हो गया, जिसकी मूर्तिप्रतिष्ठा के महोत्सव में भारत के राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद ने भी भाग लिया।

सन् १९४८ में जब सरदार एक भारतीय युद्धपोत में बैठकर गोआ के पास होकर गुजर रहे थे तो जहाज के कमांडिंग अफसर से कहा कि हमारे सामने अभी गोआ पर अधिकार कर लो। जब कमांडर ने इस संबंध में कानूनी कठिनाइयाँ बतलाईं तो कहा—"खैर, अभी रहने दो, ऐसा करने से जवाहरलाल इस पर एतराज करेंगे।"

इस प्रकार सरदार पटेल का जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए एक बहुत बड़ा आदर्श उपस्थित करता है, वह यह कि मनुष्य को केवल कमाने-खाने की जिंदगी ही व्यतीत नहीं करनी चाहिए, वरन् देश और समाज की रक्षा का प्रश्न उपस्थित होने पर निजी स्वार्थ को त्यागकर उसी को प्राथमिकता देनी चाहिए। यदि देश और समाज का पतन हो गया तो हमारी व्यक्तिगत उन्नति भी बेकार हो जाती है। इसलिए जो कोई अपने मानव-जन्म को सार्थक करना चाहता है, उसको अवश्य ही अपनी शक्ति और साधनों का एक अंश समाज सेवा के निमित्त लगाना चाहिए। जो इसकी उपेक्षा करता है, वह एक प्रकार से बेईमानी करता है। हमारा जीवन-निर्वाह समाज के आश्रय से ही संभव होता है। यदि हम समाज-सेवा के कर्तव्य को पूरा नहीं करते तो इसका अर्थ यह है कि हम जीवन के अंत तक समाज के ऋणी बने रहते हैं और उसका कुपरिणाम हमको आगामी जन्म में सहन करना पड़ेगा। इसलिए हमको अपने ही युग के महापुरुषों से, जिनमें सरदार पटेल का प्रमुख स्थान है, प्रेरणा लेकर देशभक्ति और समाज-सेवा के मार्ग पर चलना ही चाहिए।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org